में है, क्योंकि जैसा भारतीय समाज है और जैसी उसमें राजनीति है उनसे किसी भी सजग व्यक्ति के मन में और कैसे भाव पैदा होंगे। नागार्जुन की कविता का एक बड़ा हिस्सा ऐसा है जिसके भावलोक में कोमलता और मधुरता की प्रचुरता है। कोमलता और मधुरता उनकी दो प्रकार की कविताओं में है; एक तो मानवीय सम्बन्धों की अनुभूतियों से सम्बन्धित कविताओं में और दूसरे प्रकृति के विभिन्न रूपों के सौन्दर्य की अनुभूतियों के चित्रण करने वाली कविताओं में।

नागार्जुन के काव्य संसार का एक बड़ा भाग मानवीय सम्बन्धों की अनुभूतियों को व्यक्त करने वाली कविताओं से भरा हुआ है। दाम्पत्य प्रेम की उनकी दो कविताएँ प्रसिद्ध हैं। उनमें एक है 'सिंदूर तिलकित भाल' और दूसरी है 'यह तुम थीं'। दाम्पत्य के दायरे के बाहर के प्रेम की अनुभूति पर भी नागार्जुन ने कविताएँ लिखी हैं जिनमें एक है 'लेजे की अम्मा'। वात्सल्य का माधुर्य उनकी अनेक कविताओं में है, जैसे 'मेरी नवजात सखी', 'हमारा यह प्रतिनिधि', 'चौथी पीढ़ी का प्रतिनिधि' और 'यह तुख ज्ञेय नहीं' है। नागार्जुन दूसरों के वात्सल्य पर भी मुग्ध होते हैं। इसका प्रमाण है उनकी कविता 'गुलाबी चूड़ियाँ'। अपनी मातृभूमि से उनका प्रेम कई कविताओं में व्यक्त हुआ है। ऐसी ही एक महत्त्वपूर्ण कविता है 'बहुत दिनों के बाद'। इसी तरह की एक और कविता है 'अपना घर : तीन चित्र'। ये सारी कविताएँ पाठकों के मन को सहज और उदात्त बनाने वाली हैं।

किसी भी देश या क्षेत्र की विशिष्टता का निर्माण वहाँ की प्रकृति के विभिन्न रूपों से होता है। यही नहीं प्रत्येक देश या क्षेत्र की संस्कृति का वहाँ की प्रकृति के स्वरूप से गहरा सम्बन्ध होता है। नागार्जुन ये दोनों बातें जानते हैं इसलिए वे अपने कवि जीवन के आरम्भ से ही सामाजिक और राजनीतिक कविताओं के साथ-साथ प्रकृति सम्बन्धी कविताएँ भी लिखते रहे हैं। उन्होंने प्रकृति के विभिन्न रूपों, अवस्थाओं और क्रियाकलापों पर अनेक प्रकार की कविताएँ लिखी हैं। उनका एक नाम 'यात्री' भी है। इस नाम को सार्थक बनाते हुए वे आरम्भ से ही पहाड़ों की यात्राएँ करते रहे हैं और पहाड़ की प्रकृति के कोमल और रौद्र रूपों पर कविताएँ रचते रहे हैं। उनकी पहाड़ की प्रकृति सम्बन्धी कविताओं के केन्द्र में हिमालय की बहुरंगी और बहुरूपी, कोमल और कठोर, मधुर और उदात्त सुन्दरता है। हिमालय पर उनकी पहली कविता है 'बादल को घिरते देखा है' इसके साथ ही 'सफेद बादल', 'बरफ पड़ी है', 'बलाका', 'बदलियाँ हैं', 'बादलों ने डाल दिया है घेरा', 'शिखरों पर', 'चाँदी की हँसुली' आदि कविताएँ पहाड़ की प्रकृति पर हैं। प्रकृति से सम्बन्धित दूसरे प्रकार की कविताएँ वे हैं जो मैदानी धरती की प्रकृति का चित्रण करती हैं। ऐसी कविताओं में 'वसन्त की अगवानी', 'नीम की दो टहनियाँ', 'शरद पूर्णिमा', 'अबके इस मौसम में', 'हजार बाहोंवाली शिशिर', 'सुबह-सुबह' आदि।

Scanned with CamScanner

नागार्जुन जैसे समाज की कविता लिखते हुए साधारण आदमी का विशेष ध्यान रखते हैं वैसे ही प्रकृति की कविता लिखते हुए प्रकृति के उन साधारण रूपों, वस्तुओं, स्थितियों और जीवों पर कविता लिखते हैं जिन पर दूसरा कोई प्रकृति प्रेमी कवि न लिखता है, न लिखने के बारे में सोचता है। नागार्जुन ने जैसे मादा सूअर और नेवले पर कविता लिखी है वैसे ही उनकी एक कविता जुगनू पर है जिसका शीर्षक है–'जान भर रहे हैं जंगल में' :

कैसे ये नीलम उजास के
अच्छत छींट रहे जंगल में
कितना अद्भुत योगदान है
इनका भी वर्षा-मंगल में
लगता है ये ही जीतेंगे
शक्ति-प्रदर्शन के दंगल में
लाख-लाख हैं, सौ हजार हैं
कौन गिनेगा, बेशुमार हैं
मिल-जुलकर दिप-दिप करते हैं...
कौन कहेगा, जल मरते हैं...
जान भर रहे हैं जंगल में

इसी प्रकार की एक और कविता है 'जय हे कीचड़'। छोटी, पर सुगठित और सुन्दर। कविता इस प्रकार है :

टाँगें गल जाएँगी
सरिता की कछार में
पंक ही पंक है
धँसना तो पड़ेगा ही
कर्दम का तुहिनमय स्पर्श...
कम्पन की पराकाष्ठा...
जड़िमा में डूब गया स्पर्श-बोध...
रगों में प्रवहमान रक्त
जम गया मानो!
जय हे कीचड़, जय हे पंक!

नागार्जुन की प्रकृति सम्बन्धी चौथे प्रकार की कविताएँ वे हैं जिनमें मधुरता की पराकाष्ठा है। अनुभूति में और संरचना में भी। इन कविताओं में अनुभूति की लय अभिव्यक्ति की लय से जुड़ी है और कविता की संरचना में मूर्तिमत्ता के साथ संगीतमयता है। ऐसी ही कविताएँ हैं 'घन कुरंग' और 'मेघ बजे'।

Scanned with CamScanner

नागार्जुन प्रायः समसामयिकता और तात्कालिकता के कवि माने जाते हैं। यह बात उनकी सामाजिक और राजनीतिक कविताओं के बारे में कही जाती है। बहुत लोगों का खयाल है कि देश की सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों के बदल जाने पर नागार्जुन की सामाजिक और राजनीतिक कविताओं का मूल्य और महत्त्व समाप्त हो जाएगा। लेकिन अभी देश के विकास के नाम पर जो विनाश हो रहा है और आम आदमी के जीवन का जो सर्वनाश हो रहा है उस सब को देखते हुए ऐसा नहीं लगता है कि भारत के समाज और जनता के जीवन की परिस्थितियाँ निकट भविष्य में बदलकर ऐसी हो जाएँगी कि वे नागार्जुन की सामाजिक और राजनीतिक कविताओं को अप्रासंगिक बना दें। अगर कभी ऐसा हुआ तो वह नागार्जुन की कविताओं में व्यक्त आकांक्षा की पूर्ति ही होगी, पर साथ यह भी ध्यान में रखने की बात है कि उनकी प्रकृति और मानवीय सम्बन्धों से जुड़ी कविताएँ तात्कालिकता की सीमाओं से मुक्त हैं और भारतीय कविता की परम्परा में उनका स्थायी मूल्य और महत्त्व हमेशा बना रहेगा।

नामवर सिंह ने ठीक ही लिखा है कि "नागार्जुन की गिनती न तो प्रयोगशील कवियों के सन्दर्भ में होती है, न नयी कविता के प्रसंग में; फिर भी कविता में रूप सम्बन्धी जितने प्रयोग अकेले नागार्जुन ने किये हैं, उतने शायद ही किसी ने किये हों। कविता की उठान तो कोई नागार्जुन से सीखे और नाटकीयता में तो वे लाजवाब ही हैं। जैसी सिद्धि छन्दों में, वैसा ही अधिकार बेछन्द या मुक्त छन्द की कविता पर। उनके बात करने के हजार ढंग हैं।" नागार्जुन ने महाकाव्य को छोड़कर कविता के सभी रूपों का प्रयोग किया है उन्होंने कविता के रूप में एक ऐसा भी प्रयोग किया है जो अपूर्व तो है ही, अनूठा भी है। वह प्रयोग उनकी 'मन्त्र कविता' में है। वह उत्तर-आधुनिक कविता का एक नायाब नमूना है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार एक बड़े कवि की भाषा में अनेकरूपता होनी चाहिए। कविता की भाषा में अनेकरूपता का अर्थ है भाषा की बुनावट और शब्दों के संयोजन में अनेकरूपता। काव्य भाषा सम्बन्धी ऐसी अनेकरूपता हिन्दी के तीन कवियों की भाषा में है। वे कवि हैं तुलसीदास, निराला और नागार्जुन। अगर नागार्जुन की कविता 'बादल को घिरते देखा है' से आरम्भ करके 'अब तो बन्द करो हे देवी, यह चुनाव का प्रहसन' तक कोई पहुँचे तो उनकी काव्य भाषा के पाँच-छह रूप अवश्य पायेगा।

Scanned with CamScanner